प्रेस विज्ञप्ति

भारत के समुद्री खाद्य का निर्यात 2020 तक 10 अरब अमरीकी डालर करने का लक्ष्य

- सजावटी मत्स्य पालन की विशाल संभावनाओं के दोहन की आवश्यकता है
- मेंगलूर में तीन दिवसीय एक्वा एक्लेरिया इंडिया (एएआई) का आयोजन

मेंगलूर, 14 मई : कर्नाटक के मेंगलूर में आज से शुरू हुए एक उच्च स्तरीय सम्मेलन में इस बात पर बल दिया गया कि भारत को अपनी सजावटी मत्स्य पालन की क्षमता का इस्तेमाल कर अपनी अर्थव्यवस्था में सुधार करने की जरूरत है। इस समय दुनिया भर में सजावटी मत्स्य पालन का कारोबार 18 से 20 अरब अमरीकी डॉलर का है और भारत ने इस क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करायी है। इस क्षेत्र में तेजी को बनाए रखने के लिए भारत अपनी जलीय कृषि खेती को और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बना रहा है।

एक्वाकल्चर और सजावटी मत्स्य पालन क्षेत्रों पर एशिया में आयोजित होने वाली द्विवार्षिक प्रदर्शनी, एक्वा एक्लेरिया इंडिया (एएआई) के चौथे संस्करण में समुद्री क्षेत्र के मंत्रियों, प्रशासकों और विशेषज्ञों ने कहा कि इस समय मत्स्यपालन का निर्यात मूल्य 5 अरब अमरीकी डॉलर से अधिक है और यह भारत के समुद्री उत्पादों, मत्स्य पालन के साजो सामान और चारा सहित सजावटी मत्स्य पालन का मुख्य आधार रहा है। अपने आर्थिक अवसरों और संभावनाओं के कारण यह देश के लिए एक मुख्य क्षेत्र भी बन सकता है।

कर्नाटक के मत्स्य पालन मंत्री श्री प्रमोद माधवराज ने मरीन प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट डेवलपमेंट एजेंसी (एमपीईडीए) द्वारा मेंगलूर के नेहरू मैदान में 14–16 मई तक आयोजित होने वाले समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि मत्स्यपालन में 2009 –10 के बाद से अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है और 2016–17 में 5.6 अरब अमरीकी डालर के अनुमानित निर्यात होने की संभावना है।

उन्होंने कहा, ''भारत का लक्ष्य 2020 तक महत्वाकांक्षी 10 अरब अमरीकी डालर की विदेशी मुद्रा अर्जित करना हो सकता है।''

उन्होंने कहा, एएआई 2017 इस तरह के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने और भविष्य में इस दिशा में काम करने के लिए कृषि समुदाय को मदद करेगा। बेहतर प्रदर्शन के लिए जलीय कृषि क्षेत्र में वास्तविक समय पर निगरानी के लिए जीआईएस अनुप्रयोगों और मोबाइल एप्लिकेशन का उपयोग करने वाले सैटेलाइट इमेजिंग टेक्नोलॉजी की शुरुआत की गई है। संवर्धित झींगा अब मात्रा के मामले में 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान कर रहा है, जबकि निर्यात मूल्य के मामले में 80 प्रतिशत और समुद्री खाद्य निर्यात के मूल्य के मामले में 53 प्रतिशत से अधिक का योगदान कर रहा है।

उन्होंने कहा, ''यह भारत के जलीय कृषि क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।''

एक सख्त चयन प्रक्रिया के अनुसार वानैमी ब्रूड स्टॉक के विदेशी आपूर्तिकर्ताओं के चयन, केवल स्वीकृत हैचरी के लिए ब्रूड स्टॉक के आयात की अनुमति, चेन्नई में एकल एक्वाटिक क्वारंटाइन सुविधा में सभी आयातित ब्रूड स्टॉक का अनिवार्य पृथ्थकीकरण और हैचरों का सावधिक निरीक्षण और खेतों की राष्ट्रीय रोग निगरानी कार्यक्रम की मदद से स्थायी वानैमी कल्चर के विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

श्री माधवराज ने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि देश के पश्चिमी तट में एएआई का आयोजन किया जा रहा है। ''गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक जैसे राज्यों को कवर करने वाले भारत के पश्चिमी तट में भी जलीय कृषि की विशाल क्षमता है जिसे पारिस्थितिक सुरक्षा उपायों के साथ इस्तेमाल करने की जरूरत है।''

मंत्री ने बताया कि कर्नाटक सरकार जलीय कृषि और सजावटी मत्स्य पालन के तेजी से विकास के लिए एक नई अंतर्देशीय नीति तैयार करने की प्रक्रिया में है। उन्होंने कहा, ''राज्य सरकार सभी आवश्यक सहयोग का विस्तार करेगी ताकि रैपिड ऐक्शन प्लान के तहत कर्नाटक में तटीय झिंगा पालन के विकास के लिए तेजी से अनवरत रूप से कार्य किया जा सके।''

अपने मुख्य भाषण में, मेंगलूर के सांसद श्री नलिन कुमार केटील ने कहा कि ऐसा पहली बार हुआ है कि कर्नाटक में और देश के पश्चिमी तट में एएआई आयोजित किया जा रहा है।

उन्होंने कहा, ''इस तरह के आयोजन मत्स्य पालन और सजावटी मछलियों के किसानों के साथ–साथ आम जनता और छात्रों के लिए भी आयोजित किये जाने चाहिए।''

सांसद, डॉ. हरि बाबू ने कहा कि जलीय कृषि तटीय क्षेत्रों तक सीमित नहीं है क्योंकि यह हरियाणा जैसे भूमिगत राज्यों में काफी प्रगति कर रही है। उन्होंने कहा, ''मैं सुझाव दूंगा कि एमपीएडीए अपना अगला आयोजन हरियाणा में आयोजित करे।''

'उन्होंने कहा, ''हमें यह भी सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हमारे किसान समुद्री खाद्य उत्पादन में एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग न करें वरना इससे निर्यात प्रभावित होगा।''

अपने शुरुआती भाषण में, इससे पहले एमपीएडीए के अध्यक्ष डॉ. ए. जयतिलक ने कहा कि एएआई ने मत्स्य पालन और सजावटी मछली संस्कृति दोनों में नवीनतम तकनीकी क्रियाकलापों के प्रदर्शन का मंच प्रदान किया है।

उन्होंने कहा, ''हैचरी ऑपरेटरों, फीड निर्माताओं, इनपुट आपूर्तिकर्ताओं और प्रोसेसर जैसे विभिन्न हितधारकों के संयुक्त प्रयासों के कारण पिछले दो सालों में तटीय झिंगा जलीय कृषि उत्पादन बढ़कर पांच लाख टन तक पहुंच गया है।''

डॉ. जयतिलक ने कहा कि भारत के जलीय कृषि क्षेत्र में विकास एल. वानैमी के उत्पादन के कारण हुआ, जो कि चेन्नई में जलीय क्वारंटीन सुविधा के अनवरत संचालन से जुड़ा हुआ है, और जो हैचरियों के लिए रोग–मुक्त ब्रूड स्टॉक की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

मेंगलूर के विधायक श्री जे. आर. लोबो उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने इस अवसर पर बात की। एमपीएडीए सचिव श्री बी. श्रीकुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

अगले दो दिनों के दौरान, इस आयोजन में चुनौतियों और संभावनाओं पर विचार–विमर्श किया जाएगा और विभिन्न बैठकों का आयोजन किया जाएगा। यहां एक रोडमैप तैयार किया जाएगा जो तेजी से बढ़ रहे समुद्री खाद्य उद्योग को बढ़ावा देगी।

एएआई 2017 में बड़ी संख्या में किसानों, हैचरी ऑपरेटरों, खाद्य निर्माता, इनपुट आपूर्तिकर्ताओं, निर्माताओं और विभिन्न जलीय कृषि और मछलीघर के आपूर्तिकर्ताओं के साथ–साथ दुनिया के अग्रणी तकनीकी विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर, आयोजन की स्मारिका और कार्यक्रम सूची जारी की गई।